कड़ी संख्या - 21

प्रतिक्रिया कोड और कृत्रिम बुद्धि

*****

शोध एवं आलेख - डॉ. मानस प्रीतम दास

हिंदी अनुवाद - डॉ. आर. एस. यादव

अवधारणा और समन्वय: डॉ। बी के त्यागी

कृत्रिम बुद्धि यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सबसे अधिक मौलिक स्वरूप है..... प्रतिक्रियात्म तंत्र । यह तंत्र एक ऐसा सिस्टम है जो अपनी पूर्व की याददाश्त को धरोहर के रूप में समेटकर नहीं रखता और ना ही पहले के अनुभव, वर्तमान के निर्णय को प्रभावित करते हैं । यह केवल वर्तमान की परिस्थिति को भांपकर, अपनी प्रतिक्रिया करता है । इसलिए इसे प्रतिक्रियात्म तंत्र कहा गया है । इस कड़ी में एक मीडिया हाऊस से संबंधित संदर्भों के माध्यम से आप जान सकेंगे कि यह तंत्र क्या है, कैसे काम करता है और किस प्रकार प्रतिस्पर्धा के जमाने में सबसे आगे ठहरा जा सकता है । एक ।.T कंपनी में सॉफ्टवेयर खरीदा जाता है जो किसी दूसरे मीडिया घराने के पास नहीं है । इस सॉफ्टवेयर सिस्टम में, जिस प्रकार के आंकड़े फीड किए जाते हैं, उसी के अनुसार, प्रतिक्रिया करता है। सटीक विश्लेषण के बाद, कैसे और किस दिशा में काम किया जाए, उसके लिए सॉफ्टवेयर गाइडलाइन जारी करता है। कंपनी इस कार्य के लिए अपने एक पत्रकार को लगाती है, जो आंकड़े इकट्ठा करके सिस्टम में फीड करता है । पत्रकार चुनौती के तौर पर नए काम को लेता है । कंपनी उसके द्वारा किए गए कार्यों से लाभान्वित होती है और सभी दूसरे मीडिया हाऊस को पीछे पछाड़ते हुए आगे निकल जाती है । अब सवाल उठता है कि क्या उस पत्रकार को प्रोत्साहित किया गया या फिर, द्वेष के कारण वह प्रताड़ित होता है ।

> कंपनी को अपनी विश्वसनीय और गोपनीय जानकारी लीक होने का डर लग रहा है। सवाल यह भी उठता है कि नए सिस्टम के विकास पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है ? इस कड़ी में शतरंज के खेल को उदाहरण के रूप में लेते हुए

समझाने का प्रयास किया गया है कि, कैसे डीप-ब्लू जैसे रोबो ने पूर्व के अनुभवों के विश्लेषण के आधार पर विश्व स्तर के खिलाड़ी को शतरंज के खेल में पछाड़ दिया था।

प्रारंभिक संगीत

दृश्य : दो जवान पत्रकार जिनकी आयु लगभग 30 वर्ष है, अपने कार्यालय में, अगल-बगल के केबिन में बैठे हुए हैं । वह अपने रोजमर्रा के कार्यों के बारे में चैटिंग कर रहे हैं।

रोहित: अरे भाई नासिर.. कहां है वह साक्षात्कार, जिसका तुमने वादा किया था? मेरे पत्र का पृष्ठ तो अभी अधूरा ही है।

नासिर: कितनी जगह अभी शेष बची है।

रोहित: दोस्त! अभी तो पूरा कॉलम बचा है। यदि मैं संपादक महोदय को बताऊंगा, तो, यही जवाब मिलेगा - किसी विज्ञापन को लगा दो। मैं अपने पृष्ठ को बदसूरत नहीं करना चाहता (हंसते हुए) |

नासिर: वह तो ठीक है। मैं आज सायंकाल को यह काम पूरा कर देता हूं और कल तक साक्षात्कार तुम्हारी मैज पर होगा।

रोहित: क्या तुम अपने फोन पर, इस साक्षात्कार को करने जा रहे हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। यह पत्रकारिता पर एक धब्बा है। यह तो वही हुआ जैसे कोई गुमनाम फिल्म निदेशक, वापिस किसी नई फिल्म के साथ, पुनः छा जाना चाहता है। और... तुम इस साक्षात्कार को फोन पर करना चाह रहे हो।

नासिर: अरे यार! इतनी जल्दी निर्णय पर मत पहुंचो । मैं पिछले मंगलवार को उससे मिला था। वह काफी विचलित और दुखी था इसलिए साक्षात्कार लेना उचित नहीं समझा | आज वह ठीक है। अभी अभी मेरे पास संदेश आया है और समझो की साक्षात्कार हो ही गया।

रोहित: इसलिए अभी आशा की किरण बची हुई है।

नासिर: रोहित अभी इतने उतावले मत बनो। सारा कार्य करना शेष बचा है। अच्छा यह बताओ, उधर गोपाल है। कॉफी पीने की इच्छा हो रही है।

रोहित: अच्छा, थोड़ा इंतजार करो। मैं व्यवस्था करता हूं।

नासिर: इतने दयालु मत बनो (हंसते हुए)

रोहित: मैं जैसा हूं, वैसा ही हूं। मुझे, अपने लिए भी, एक कप कॉफी चाहिए। अच्छा मैं जल्दी करता हूं।

(जैसे ही रोहित वहां से जाता है - गोपाल जिसकी उम्र 30 वर्ष है - नासिर के पास पहुंचता है)

नासिर: गोपाल.. तुम कहां गए थे। मैंने एक घंटे पहले, तुमसे, कॉफी लाने के लिए कहा था।

गोपाल: सर! मुझे दोष मत दो। संपादक महोदय ने मुझे कोने वाला कमरा साफ करने के

लिए कहा था। मैं वही काम करने लग गया था और वह आपको बुला रही है।

नासिर: मुझे ! अब, क्या पहाड़ा आ पड़ा ! गोपाल तुम्हें कुछ पता है।

गोपाल: सर! कोई आईडिया नहीं है। परंतु वह दुखी लग रही थी।

नासिर: हां.. मैं अनुमान लगा सकता हूं। आज की शाम गयी (दु:खी होकर) |

(नासिर अपनी कुर्सी को पीछे धकेलते हुए उठता है और संपादक के कक्ष की ओर चल देता है । वह, दरवाजे को खोल कर अंदर प्रवेश करता है और पूछता है | अर्पिता टेबल के दूसरे तरफ बैठी हुई है)

नासिर: मैडम.. आपने मुझे बुलाया ?

अर्पिता: आइए नासिर.. बैठिए। बस, मैं यह ईमेल भेज देती हूं। मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए। बस यह भेज दी... ईमेल

नासिर: क्या कोई विशेष बात.. मैडम।

अर्पिता: हां नासिर - कुछ विशेष बात है, इसलिए तुम्हें बुलाया है। नासिर, यह सब गोपनीय (confidential) है और मैं तुम पर विश्वास कर सकती हूं।

नासिर: हां मैडम, आप कहिए - यह सब बातें मेरे तक ही रहेंगी ।

अर्पिता: तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है। मेरा भी यही सोचना है। मैंने इस बारे में किसी से बात नहीं की है | मेरा मानना है कि, जो संदेश हमारे प्रबंध निदेशक ने भेजा है, उसके बारे में अभी तक किसी को कुछ ज्ञान नहीं है।

नासिर: मुझे तो डर सा लग रहा है, मैडम।

अर्पिता: (हंसते हुए) हम एक नई तकनीक पर काम करना चाह रहे हैं। इससे हमें अपने प्रतिद्वंदियों के कार्यकलापों को समझने में आसानी होगी। हमें उन पर पकड़ बनाने में आसानी होगी और (हंसते हुए) हम अपनी विकास की गति को बनाए रख सकेंगे।

नासिर: नया सिस्टम! परंतु हर एक मीडिया घरानों में कोई ना कोई छुपा भेड़िया होता है, जो सूचनाओं को पास-ऑन करता रहता है। यह एक चिंता का विषय हो सकता है।

अर्पिता: नहीं ऐसा नहीं है। नासिर - मेरे बारे में सोचना | ऐसा नहीं होना चाहिए। छुपे भेड़ियों पर मैं ध्यान रखूंगी। इसलिए किसी भी परिस्थिति में ऐसे लोगों को इस कार्य के साथ नहीं जोड़ना है। हमें पूरी तरह इसे गोपनीय बनाकर रखना है। ऐसी ही बात दूसरी जगह भी होती है। इससे ही मालूम पड़ता है कि तुम्हारा प्रतिद्वंदी किस दिशा में और किस गति से काम कर रहे हैं।

नासिर: ये होना भी चाहिए .. परंतु वह नई तकनीक क्या है?

अर्पिता: यह एक प्रोग्राम है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित है।

नासिर: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस! यह तकनीकी, किस प्रकार सहायक हो सकती है?

अर्पिता: यही तुम्हारा रोल होगा। सिस्टम में सारी की सारी जानकारियां बुद्धिमता पूर्ण

डाली जाएंगी, कि किस प्रकार मीडिया हाउस काम कर रहे हैं? इसकी मदद से हम एक नया मॉडल तैयार कर सकेंगे, जिससे हम समझ पाएंगे कि किस प्रकार दूसरे मीडिया हाउस काम कर रहे हैं।

नासिर: और - यह सिस्टम हमारे सवालों के उत्तर तलाश कर सकेगा।

अर्पिता: तुमने सही समझा.....इसलिए आज ही अपने कंप्यूटर और दूसरी चीजों को, उस कोने वाले कमरे में ले आओ। गोपाल ने इसकी सफाई कर दी है और बिजली

के सभी पॉइंट को भी चेक करवा दिया है।

नासिर: आप यह कह रही हैं कि अब से मैं पत्रकार नहीं रहा । केवल, गुप्त सूचनाओं का एक चौकीदार (हंसते हुए) |

अर्पिता: धैर्य रखो। आप वही हैं, जो अब आप हैं। सौ-फ़ीसदी एक पत्रकार... परंतु इसके साथ-साथ, इस नये सिस्टम को अपडेट रखवाना है और तर्क-संगत प्रश्न भी उठाने हैं। चिंता मत करो। कंपनी इस काम के लिए तुम्हें पुरस्कृत भी करेगी।

नासिर: क्या मैं अकेला ही इस कमरे में काम करूंगा?

अर्पिता: तुम किस पर विश्वास कर सकते हो? रोहित पर..

नासिर: हां.. मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं।

अर्पिता: हां - मुझे तुम दोनों की जोड़ी पसंद है। परंतु रोहित से पूछना होगा।

नासिर: यह आप मेरे पर छोड़ दो। जैसा आप चाहोगी, रोहित वैसा ही करेगा।

अर्पिता: नासिर हमारे लिए यह प्रोजेक्ट बहुत जरूरी है और बाकी तुम समझ सकते हो।

नासिर: मैडम बाकी मेरे पर छोड़ दो । सब ठीक होगा ।

अर्पिता: बहुत अच्छा ! अभी से नए काम पर तैयारी शुरू कर दो।

नासिर: धन्यवाद मैडम।

(नासिर संपादक के कमरे से बाहर आता है और देखता है कि रोहित उसे तलाश कर रहा है।)

रोहित: हेलो डियर... क्या नई बात है। तुम्हारी कॉफी बर्फ जैसी ठंडी हो गई है। और तुम्हारा वेटर रोहित इधर-उधर आंखें फाड़ रहा है।

नासिर: पहले आराम से बैठ जाओ, मुझे एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी है।

रोहित: (अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है और कुर्सी को नासिर के पास खींचता है और मन्द-

मन्द स्वर में चर्चा करता है।) बहुत गंभीर लगता है | छंटनी और वेतन कटौती की बात चल रही है।

नासिर: अरे भाई, इनमें कोई बात नहीं है, बल्कि मेरी बात मान जाओ, तुम्हारा वेतन बढ़ने जा रहा है।

रोहित: क्या कह रहे हो? क्या मैंने कभी तलाक जैसी बात कही है, मेरा मतलब किसी अलग डेस्क की बात। आपको मेरे जैसा सहयोगी नहीं मिलेगा।

नासिर: क्या पागलपन की बात कर रहे हो? कुछ नया ही है।

(संध्या जो कम आयु की है का प्रवेश - नासिर के पास आती है। .....सभी शांत)

संध्या: हेलो नासिर।

नासिर: क्या बात है.... संध्या? कहीं कुछ तनाव लग रहा है। सब ठीक तो है..संध्या ।

संध्या: नहीं.. कोई तनाव की बात नहीं है। सब ठीक है। अच्छा नासिर, संपादक मैडम

क्या कह रही थी? सुना है तुम नए कमरे में शिफ्ट हो रहे हो। लगता है प्रमोशन होने जा रहा है।

नासिर: संध्या, ऐसी बात नहीं है। कुछ और ही बात है

संध्या: क्या कुछ गोपनीय बात है? हमें नहीं बताओगे।

नासिर: संध्या विश्वास करो। कोई नई बात नहीं है। मुझे अपने वर्तमान काम के साथ-साथ, रिकॉर्ड को रखने का काम भी दिया जा रहा है।

संध्या: रिकॉर्ड .. यह तो कोई भी गया-बिता कर्मचारी कर सकता था। झूठ बोल रहे हो नासिर। कुछ और ही बात है।

नासिर: संध्या - यदि विश्वास नहीं होता तो मैं क्या करूं | आप संपादक मैडम से ही क्यों

नहीं पूछ लेती।

संध्या: ओह नासिर - ऐसा क्यों कहते हो? मुझे क्या लेना है। अच्छा, अब मैं अपनी डेस्क पर जाती हूं। मुझे अपने पोर्टल पर उस तेंदुआ की मौत की खबर को डालना है | अच्छा, चलती हूं। बाय..

नासिर: बाय संध्या! ध्यान रखना...

(संध्या वहां से चली जाती है और रोहित से चर्चा करती है)

रोहित: अब मुझे समझ में आया, कुछ गंभीर मुद्दा है।

नासिर: वो कैसे?

रोहित: जिस तरह तुम सारी बातें संध्या से छुपा रहे थे। तुम मेरे दिमाग को गोबर-गणेश

जो समझते हो (हंसता है)

नासिर: ओके.. ओके .... बहुत हुआ। अब मेरी बात सुनो। आपको एक शब्द भी किसी

दूसरे को नहीं बताना है।

रोहित: अच्छा भाई .. वादा करता हूं ।

नासिर: हमारे प्रबंधकों ने एक नया निर्णय लिया है।

(ध्वनि परिवर्तन: 3 दिन बाद दोनों अपने नए कमरे में बैठना शुरु करते हैं। नासिर का फोन बजता है)

नासिर: हेलो.. मैं नासिर बोल रहा हूं। हां भगवानी कैसे हो? लगता है तुम्हारा मोबाइल नंबर बदल गया है।

भगवानी: (फोन के दूसरी तरफ) हां सर .. मैं इस फोन को कभी-कभार ही काम में लेता हूं।

नासिर: ठीक .. मैं समझा .. अच्छा जो जानकारियां मैंने चाही थी, उनका क्या हुआ?

भगवानी: हां, मैंने अपने दोस्तों से मालूम किया है। वह कंपनी, शहर से लगते हुए टाउन में भूमि खरीद रही है । मुझे जगह का तो पता नहीं, हां - पर सिटी में तो नहीं है।

नासिर: श्रीमान भगवानी.. आप अपनी दृष्टि बनाए रखें। वह हमारी कंपनी के लिए अच्छा है और कुछ कहना है?

भगवानी: नहीं.. मुझे कुछ नहीं कहना।

नासिर: बहुत-बहुत धन्यवाद। जब कुछ पता चले तो मुझे जरूर सूचित करें।

भगवानी: जरूर.. अब मैं चलता / ..... फ़ोन रखता हूं।

नासिर: Bye.. OK.. have a nice time.

रोहित: यदि आप इस प्रकार सूचनाएं प्राप्त कर सकते हो तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

तकनीकी की क्या जरूरत है? नासिर ..| तुम्हारे गुप्तचर तो पहुंचे हुए हैं। तब

उसको कोने वाले कमरे की क्या आवश्यकता?

नासिर: रोहित, यह तो उस तकनीकी को पुष्ट करने वाला चारा है। जब से पिछले तीन दिनों से हम इस कमरे में बैठने लगे हैं हमें कई गुप्त सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। वो भी मीडिया की और मीडिया से बाहर की भी.. हमारा विश्लेषण इसी पर निर्भर होगा। मालूम है इस को क्या नाम दिया है?

रोहित: कोई जानकारी नहीं.. आप बताएंगे?

नासिर: यह बड़ा काव्यात्मक है । इसे कहा जाता है - गहरा गोता लगाना यानि Deep Response!

रोहित: क्या बात है? हां.. मुझे कुछ याद आ रहा है, याद आया.. Deep Blue !

नासिर: Deep Blue.. लगता है किसी समुद्री यात्रा से जुड़ा है।

रोहित: नहीं.. नासिर तुम्हें शतरंज में कोई रूचि है? कंप्यूटर कैसे शतरंज की चाल चलता है? कुछ याद है।

नासिर: मुझे तो इसका बिल्कुल भी ज्ञान नहीं .. रोहित मेरे लिए तो शतरंज आसमान से तारे तोड़ने जैसा है। मेरे दादाजी और चाचा जी अवश्य यह खेल खेलते थे, परंतु मैं कभी उनकी, चली जाने वाली चालों को नहीं समझ सका ।

रोहित: .....बहाना ..... कठिन तो है, पर इतना भी नहीं कि हम समझ ही ना सकें । इसके खेल के खिलाड़ी जीनियस समझे जाते हैं। बॉर्बी फिश्चर, विश्वनाथ आनंद, गैरी काशपारोव, नाइजिल शॉर्ट, बालाडिमीर - यह सभी बहुत बड़े खिलाड़ी थे। परंतु एकदम शांत चित वाले।

नासिर: मैं समझता हूं। परंतु उन सभी का हमारे कंप्यूटर प्रोग्राम से क्या संबंध?

रोहित: आप यांत्रिकी द्वारा - बड़े बड़े खिलाड़ियों को चैलेंज कर सकते हो। ऐसा ही एक प्रोग्राम था - Blue Deep.

नासिर: समझा.. इसीलिए तुम इस नाम को सुनकर उतावले हो रहे हो।

रोहित: ठीक समझे। Deep Blue ने सबसे पहले अपनी क्षमता का प्रदर्शन 1996 में दिया

था। जानते हो - उसने गैरी काशपारोव को छः ह चालों में से एक में हरा दिया था | उस समय वे विश्व में सबसे प्रखर खिलाड़ी थे। खेल के बाद, दिए एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि वह कंप्यूटर की समझ पर आश्चर्यचकित हैं।

नासिर: अच्छा.. बड़ी ही रोचक कहानी हैं। मुझे ज्ञान नहीं था।

रोहित: उस खेल के बाद Deep Blue के जनक कहे जाने वाले कंप्यूटर वैज्ञानिकों ने उसमें कुछ बदलाव किए और फिर से काशपारोव को चैलेंज किया। यह मैच मई

1997 में आयोजित किया गया थाऔर जानते हो, इस बार काशपारोव को हराकर

विश्व में तहलका मचा दिया।

नासिर: तुम्हारा कहना है कि Deep Blue एक यांत्रिकी मशीन है।

रोहित: बिल्कुल सही है। मुझे पहले ही बता देना चाहिए यह एक मशीन है जिसको कंप्यूटर आदेश देता है आजकल तो सब कुछ बदल गया है।

नासिर: रोहित.. कुछ और बताओगे, रुचिकर विषय है।

रोहित: अपनी हार से काशपारोव क्रोधित हो गया और उसने Deep Blue बनाने वाली कंपनी पर चीटिंग का आरोप लगाया। उसने कहा कि कंप्यूटर की सभी चालें

अद्भुत और नवाचारों से परिपूर्ण थी।

नासिर: बेचारा काशपारोव ।

रोहित: उसके बाद Deep Blue को रिटायर कर दिया गया। उसके पार्ट आज भी अमेरिका के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखे हुए हैं। जानते हो, वह कंप्यूटर एक सेकंड में एक हजार लाख स्थितियों का आकलन कर सकता था ।

नासिर: सच में।

रोहित: हालांकि उस खेल के विश्लेषण से पता चला कि काशपारोव की चालें अविवेकपूर्ण और गलत निर्णयों पर आधारित थे । Deep Blue की जीत ने बता दिया कि मानव की क्रियात्मकता और सोच, जो कि गणित की जटिल गणना पर आधारित है, उसको भी कंप्यूटर जैसी मशीन द्वारा मात दी जा सकती है।

नासिर: अच्छा, मुझे सोचने दो। जो आप कह रहे हो, बताता है कि artificial intelligence से यह सब कुछ संभव है | नए शोध और अविष्कार इसे नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहे हैं।

रोहित: बिल्कुल सही कहा।

नासिर: क्या हमारे आनंद ने भी कभी ऐसा खेल खेला है - मेरा मतलब है, कंप्यूटर से।

रोहित: 1998 में आनंद को भी ऐसे ही मशीन जिसका नाम रेबल था, उसके साथ खेलने

का अवसर मिला था | उस समय, मानव जोड़ा जीतने में सफल रहा और खोया

सम्मान प्राप्त करने में सफल रहा।

नासिर: क्या खुशी की बात है! हालांकि मैं शतरंज का खेल नहीं समझता, परंतु आनंद का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं।

रोहित: Deep Blue की घटना पुरानी हो चुकी है । उस मशीन में भी खामियां हो सकती हैं ।

नासिर: क्या मतलब? क्रिया और प्रतिक्रिया तो साथ साथ चलती है।

रोहित: उन कंप्यूटर मशीनों में, पूर्व के प्रकार के अनुभवों को नहीं डाला गया था और उसके अनुरूप काम करने के लिए भी प्रोग्राम तैयार नहीं किए गए थे - Deep Blue तो तुरंत की गई क्रिया के अनुरूप चला होगा।

नासिर: उसके बाद तो परिस्थितियां बदल चुकी हैं।

रोहित: सही कहा ....नासिर। इस दिशा में नई मशीन जो आई वह है .....अल्फा - गो, केi जिसे चार घंटों में ही तैयार कर लिया गया था। अब परिस्थितियां बदल गई हैं और शतरंज का खेल दो यांत्रिकी मशीनों के बीच खेला जाने लगा है।

नासिर: सच...।

रोहित: बिल्कुल सही है। इस खेल को पूरा समझ लेने के बाद अल्फा - गो ने सबसे श्रेष्ठ सॉफ्टवेयर – 'Stockfish – 8' को हराया था। इसमें 100 खेलों की चाल चली गई और Alpha-

Go आसानी से विजयी रहा।

नासिर: रोहित.. तुमने अच्छी जानकारियां दी हैं। मैंने इन तीन दिनों में जाना है कि हमारे सॉफ्टवेयर को बनाने वाले अपनी प्रारंभिक स्टेज में है और इसमें कई

परिवर्तन संभव है।

रोहित: हां ... Artificial Intelligence अभी शुरू की स्टेज में ही है। आइए हम अपने काम की बात पर आएं।

नासरीन: रोहित! क्या तुम इस प्रोग्राम से प्रभावित हुए हो ? इस सिस्टम से हम दूसरों से आगे निकल चुके हैं । हम ऐसे-ऐसे नए कदम उठा रहे हैं, जो हमारे प्रतिद्वंदी सोच भी नहीं सकते।

रोहित: यह तो ठीक है नासरीन, परंतु अभी भी हम इस सिस्टम को विकसित करने के प्रारंभिक दौर में है । आप आंकड़े फीड करते हो तो यह प्रतिक्रिया करता है । इसमें पूर्व के अनुभवों से सीखने की कोई गुंजाइश नहीं है । पत्रकारिता जगत में अभी इसको स्थापित किया जाना है।

नासरीन: रोहित, आज के जमाने में स्मृति स्पेस की कोई समस्या नहीं है।आगे की सोचो।

रोहित: यह स्मृति तंत्र से संबंधित समस्या नहीं है । इस तंत्र और सिस्टम से निर्णय करने में दक्षता और आंकड़ों के विश्लेषण में अहम भूमिका हो सकती है । सबसे बड़ी बात यह है कि निर्णय तुरंत और स्थिति विशेष को ध्यान में रखते हुए लिए

जा सकते हैं ।

नासरीन: यदि आप कहते हैं, तो, ठीक है | मुझे तो, अपनी ड्यूटी करनी ही होगी ।

रोहित: आप सही हैं | अच्छा यही है की हम अपने काम पर ध्यान दें । Artificial Intelligence का भविष्य क्या होगा इसकी चिंता अभी ठीक नहीं (हंसते हुए)

नासिर: मुझे पुलिस मुख्यालय भी जाना है। यदि साथ चल सको तो अच्छा रहेगा।

रोहित: परंतु.. आपने इतनी सारी जानकारियां अपलोड करने को जो दी हैं।

नासिर: ओह! समझा.. मैं भूल गया था। आप अपने काम को जारी रखो। मैं काम समाप्त

होने के बाद शीघ्र ही लौट आऊंगा।

रोहित: बाय.. अपना ध्यान रखना।

(नासिर बाहर जाता है - ध्वनि परिवर्तन - कंप्यूटर पर काम करना - मिस्टर संतोष (40 वर्ष) साइबर अपराध शाखा से)

नासिर: संतोष जी.. कोई प्रगति हुई, इस घटना पर?

संतोष: नासिर मैंने बताया था यदि कुछ नया घटा तो मैं अवश्य तुम्हें सूचित करूंगा।

नासिर: हां, आपने बताया था। परंतु यह प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र है, अतः देरी करना अच्छा नहीं होगा। और हर समाचार पत्र आगे रहना चाहता है।

संतोष: हां - मैं आपसे सहमत हूं और आप पर आ रहे दबाव को समझ सकता हूं। हमारी कंपनी इस क्षेत्र में अपनी पहचान रखती है। पाठकगण अपराधों के बारे में जानना चाहता है और बढ़ रहे अपराधों से उन्हें डर भी लगता है। साइबर अपराध आज के समय की सच्चाई है और दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

नासिर: परंतु मैंने सुना है और मैं इसे सत्यापित भी करना चाहूंगा। क्या यह सही है कि जेटा कंपनी अपने साइबर अपराध से जुड़े हुए कर्मचारियों की एक पार्टी आयोजित करने जा रही है।

संतोष: मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता हूं। वैसे भी कंप्यूटरों से सूचनाओं के चुराए जाने से इसका क्या संबंध है?

नासिर: अच्छा.. मैं आप पर दबाव नहीं डालना चाहता हूं|मैं इसे कंफर्म करना चाहता था।

संतोष: कृपया, अपने विचारों को मुझ पर थोपो मत। आप चाहो तो उप-जिलाधीश से

पता कर सकते हो।

नासिर: संतोष.. यह इतना जरूरी भी नहीं है, वैसे भी यह समाचार नहीं बनता।

(नासिर अपने कार्यालय के लिए चल देता है)

दृश्य: 4.... महीने बाद एक प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन। विभाग के सभी कर्मचारी और प्रबंधक उपस्थित हैं । उपस्थित पत्रकार आपस में बातचीत कर रहे हैं और अर्पिता सभी को

संबोधित कर रही है।

अर्पिता: मैं आप सभी का स्वागत करती हूं। प्रेस कॉन्फ्रेंस के साथ-साथ, आज हमारे स्थापना दिवस की 10वीं वर्षगांठ भी है। मैं हमारे प्रबंध निदेशक श्रीमान मनचन्दानी जी को संबोधन के लिए आमंत्रित करती हूं , उसके बाद प्रश्न उत्तर का सिलसिला शुरू होगा।

मानचन्दानी: Ladies and Gentlemen! आज हमारे लिए खुशी का दिन है। आपको याद होगा कि पिछले तिमाही में हमारी प्रगति अद्भुत रही है। हमें हमारे पत्रकार और संपादकों पर गर्व है। मैं एक लंबे भाषण से आपको बोर नहीं करना चाहता हूं। साथ में मैं आपको यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारी कंपनी पत्रकारिता के उत्कृष्ट मापदंडों पर चलकर आगे बढ़ रही है। मैं पुनः आप सभी को बधाई देता हूं और आगे के लिए संपादक महोदय को आमंत्रित करता हूं।

अर्पिता: धन्यवाद सर! अब समय है सवाल – जवाबों का ।

पत्रकार -1 : मिस्टर मनचंदानी, आप बताएंगे कि आपके समाचार पत्र का जो सरकुलेशन बढ़ रहा है उसका क्या कारण है | यह बढ़ोतरी इतनी हुई है कि सभी चकित हैं।

मनचन्दानी: आपके सवाल के लिए धन्यवाद। इसके लिए मैंने बताया कि इसके पीछे हमारी

टीम की भूमिका रही है। सारी टीम ने योजना के अनुसार काम किया है और आगे बढ़ी है। अर्पिता जी ने इस टीम को नया मार्ग सुझाया है।

पत्रिकार-2: संपादक महोदया, आपकी टीम में सबसे श्रेष्ठ पत्रकार और रिपोर्टर कौन रहे हैं?

अर्पिता: वैसे तो हमारी टीम एक परिवार की तरह है। सभी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और मिलकर काम करते हैं।

पत्रकार-2: श्रीमान मनचन्दानी, क्या आप बताएंगे कि कुछ दिन पहले आपने अपने ही दो पत्रकार - नासिर और रोहित को बाहर निकाल फेंका। नासिर को तो आपदा-प्रबंधन पर रिपोर्टिंग करने के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा जा चुका है।

मानचन्दानी: मैं इसे बाहर निकाल फेंकना नहीं कहूंगा। आज विश्व बहुत बदल चुका है। हर एक को अच्छे मौकों की तलाश होती है। उन्होंने अपने त्यागपत्र दिए थे, जिन्हें कंपनी ने स्वीकार कर लिया है। अर्पिता जी इस पर अपनी प्रतिक्रिया दें तो ज्यादा उचित होगा।

अर्पिता: हमारे प्रबंध निदेशक महोदय ने सही कहा है। रोहित और नासिर बहुत अच्छे कार्यकर्ता थे | हर एक को जीवन में आगे बढ़ने का हक है। मैं उनके अच्छे भविष्य की कामना करती हूं। इस दौरान हमने कुछ नए कॉलेज से पासआउट युवाओं को लेने का फैसला किया है।

पत्रकार -1: मेरा एक और सवाल है?

अर्पिता: मेरा विचार है कि लंच का समय हो गया है। मुझे भी भूख लगी है और सोचती हूं

आप सभी का भी यही मानना है।

मानचन्दानी: उचित होगा खाते समय इस चर्चा को जारी रखें। मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं।

(पत्रकार अचानक समाप्त हुई प्रेसवार्ता से खिन्न से नजर आए। क्या प्रबंधक हमें फालतू समझता है? नासिर को इनके सारे भेद पता थे)

बाहर सड़क पर रोहित और नासिर मोटरसाइकिल पर जा रहे हैं यातायात का शोर।##

रोहित: नासिर, हम लंबे समय के बाद यात्रा पर निकले हैं।

नासिर: सही कहा। परंतु तुम्हारी यह बाइक पुरानी पड़ चुकी है। बहुत धक्के लग रहे हैं।

रोहित: पुरानी चीजें, पुराने दोस्तों जैसी होती हैं। इसलिए मैं इसे बदलना नहीं चाह रहा हूं।

नासिर: क्या तुम उनके अगले कदम के बारे में कल्पना कर सकते हो?

रोहित: मुझे संध्या से कुछ पता चला है। तुम्हारी उस यांत्रिकी दिमाग से तो मेरी कल्पना ज्यादा सटीक है।

नासिर: अर्पिता ने जो कुछ किया है, मुझे उस पर अब भी विश्वास नहीं हो रहा है। मैं तो बोनस की आस लगाए बैठा था और उसने त्यागपत्र मांग लिया।

रोहित: देखो। हमारे पास उनकी जानकारियों का भंडार है - यह तो होना ही था।

नासिर: तुम्हारे कहने का अभिप्राय है कि उनका विश्वास हम पर नहीं रहा। हमने कंपनी

के लिए क्या कुछ नहीं किया।

रोहित: हां, हमने एक नई तकनीकी पर काम किया, जिस पर दूसरा कोई नहीं कर सकता था।

नासिर: अच्छा रोहित अब क्या किया जाए? ज्यादा समय तक तो बेरोजगार रहना भी समस्या खड़ी कर देगा मुझे पिताजी की दवाइयों के लिए और छोटे भाई की ट्यूशन फीस के लिए भी पैसे देने होते हैं।

रोहित: हम अपनी कंपनी शुरू करते हैं।

नासिर: कंपनी.. तुम क्या कह रहे हो? हम पत्रकार हैं, व्यापारी नहीं।

रोहित: पत्रकार हैं, परंतु पुराने ख्यालों के नहीं। हम डिजिटल युग के अन्वेषक हैं। उस यांत्रिकी बुद्धि को विकसित करने वाले सज्जन ने कल रात मुझे फोन किया था। उस ने सुझाव दिया था कि क्यों नहीं हम एक Consultancy firm शुरू करें जो विभिन्न मीडिया घरानों को सलाह दे सके | अभी ये उभरा हुआ क्षेत्र है और संभावना बहुत है |

नासिर: सच में ..!

रोहित: मुझ पर विशवास करो नासिर | उसने बताया कि बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ इस काम में साथ आने को तैयार बैठी हैं | आपको कुछ नहीं करना है, बस, पुलिस मुख्यालय जाकर प्रश्न उठाने हैं, बाकी सब काम, दूसरी एजेसियाँ करेंगी |

नासिर: इसका मतलब, अर्पिता एंड कंपनी अब अकेली नहीं रहेगी | सभी मीडिया हाउस अब हम पर निर्भर करेंगे |

रोहित: बिलकुल ऐसा ही होगा | देखो पकड़ कर रखना – क्यों नहीं इस सुहाने मौसम

का बाइक पर आनन्द लिया जाए |

नासिर: O.Kay....ये देखो | साइबर वर्ल्ड की बिल्डिंग ....क्या बनावट है ?

समापन संगीत